फसल की कटाई -

कालमेघ की 2 से 3 कटाईयॉ ली जा सकती है। अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि इसमें एन्ड्रोग्राफोलाइड (कड़वे पदार्थ) पुष्प आने के बाद ही अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। पहली कटाई जब फूल लगना प्रारम्भ हो जाय तब करना चाहिए । इसे जमीन से 10 से 15 से0मी0 ऊपर से काटना चाहिए। काटने के बाद खेत में 30 कि0ग्रा0 नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए। वर्षा न हो तो तुरंत पानी देना चाहिए। खेत में निराई–गुड़ाई पहली बार करें तब भी 30 कि0ग्रा0 नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए। दूसरी कटाई भी फूल आने पर करनी चाहिए। तीसरी बार सम्पूर्ण पौधा बीज पकने पर उखाड़ना चाहिए। पौधों को सुखाकर बोरों में भरकर भण्डारण किया जाता है ।

रोग और कीट -

पौध गलन की रोकथाम मे लिए बीजों को 0.2 प्रतिशत बावेस्टीन से उपचारित कर बोना चाहिए। इसके पश्चात् यदि किसी कीट व रोग का प्रकोप होता है तब आवश्यकतानुसार कीट नियंत्रण करना चाहिए। जहॉ तक सम्भव हो कीट नियंत्रण हेतु नीम की खली व जैविक कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिए।

अंतरवर्तीय फसल के रूप में -

कालमेघ को नीलगिरी, पापुलर, ऑवला व अन्य वृक्ष प्रजातियों के साथ अन्तरवर्तीय फसल के रूप में लिया जा सकता है ।

फसल सुखाना एवं संग्रहण -

फसल को कटाई के तुरंत बाद हवादार जगह में सुखाना चाहिए जिससे रंग में अन्तर न आए। फसल अच्छी तरह सूखने के बाद इसे बोरे में भरकर संग्रहण किया जाता है।

अनुमानित आय-व्यय प्रति हेक्टेयर -

कालमेघ की खेती के लिए प्रति हेक्टेयर अनुमानित खर्चा रू. 25,000/– होता है। इसकी खेती से आय लगभग रू. 85,000/– होती है। इस प्रकार किसान कालमेघ की खेती से लगभग रू. 60,000/– प्रति हेक्टेयर लाभ अर्जित कर सकता है।

संकलन एवं संपादन :

डॉ. ए. के. पाण्डे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

कालमेघ

(Andrographis paniculata)

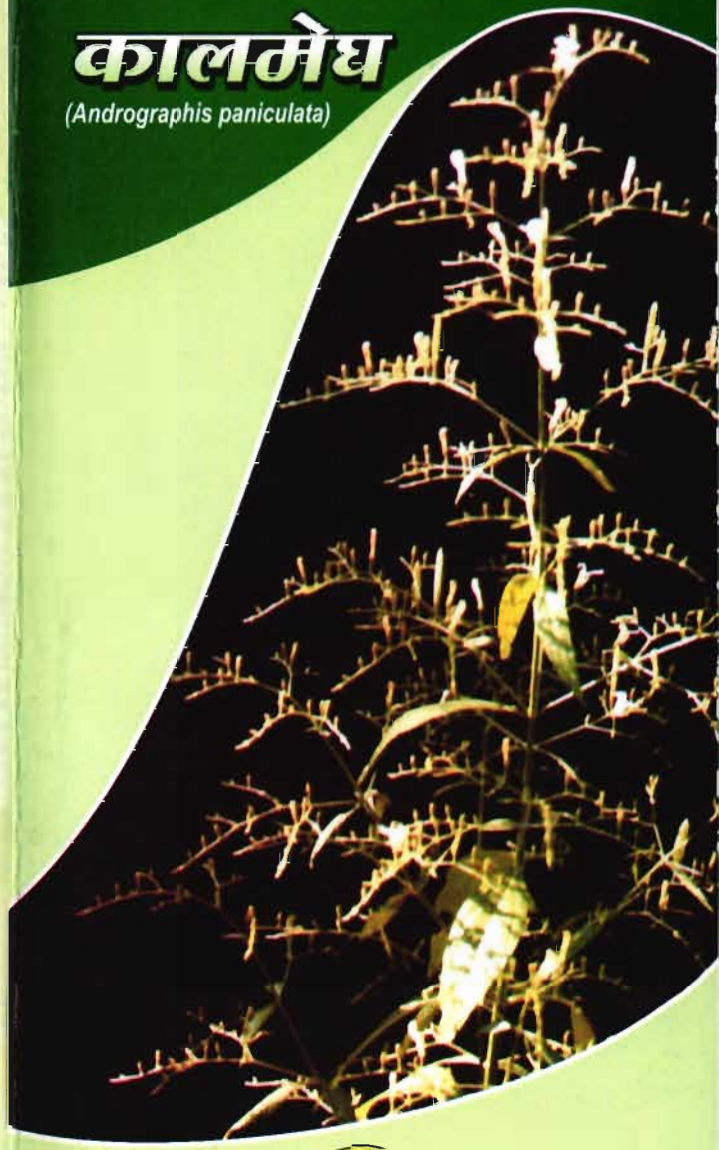

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर – आर.एफ.आर.सी, मण्डला रोड

जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

परिचय –

यह एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है । इसे कडू चिरायता व भुईनीम के नाम से भी जाना जाता है। इसका वानस्पतिक नाम एन्ड्रोग्राफिस पेनीकुलेटा है एवं यह एकेन्थेसी कुल का सदस्य है। यह हिमालय मे उगने वाली वनस्पति चिरायता (सौरसिया चिरायता) के समान होता है। कालमेघ शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों के वनों में प्राकृतिक रूप में पाया जाता है । यह एक शाकीय पौधा है। इसकी ऊँचाई 1 से 3 फीट होती है। इसकी छोटी–छोटी फल्लियों में बीज लगते हैं। इसके पुष्प छोटे श्वेत रंग या कुछ बैगनी रंगयुक्त होते हैं। बीज छोटा व भूरे रंग का होता है।

उपयोग –

इसका उपयोग अनेकों आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक दवाईयों के निर्माण में किया जाता है। यह यकृत विकारों को दूर करने एवं मलेरिया रोग के निदान हेतु एक महत्वपूर्ण औषधि के रूप में उपयोग होता है। खून साफ करने, जीर्ण ज्वर एवं विभिन्न चर्म रोगों को दूर करने में इसका उपयोग किया जाता है।

सक्रिय घटक –

इस पौधे से प्राप्त रसायनों की गुणवत्ता के कारण इसे औषधि पौधों में एक विशेष स्थान प्राप्त है। इस कारण इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आधुनिक चिकित्सा पद्धति में सम्मिलित किया है। कड़वे रसायन जैसे– एन्ड्रोग्राफोलाइड, एन्ड्रोग्राफिन, पेनीकोलिड, फ्लेवोन एन्ड्रोग्राफिस एवं पेनीकुलीन मुख्य है।

जलवायु –

यह समुद्र से लेकर 1000 मीटर की ऊँचाई तक समस्त भारतवर्ष में पाया जाता है। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा दक्षिणी राजस्थान के प्राकृतिक वनों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। उष्ण, उपोष्ण व गर्म आर्द्रता वाले क्षेत्र जहॉ वार्षिक वर्षा 500 मि.मी. से 1400 मि.मी. तक होती है तथा निम्न तापमान 5°C से 15°C तक एवं अधिकतम तापमान 35°C से 45°C तक हो, वहॉ ठीक प्रकार से उगाई जा सकती है।

मृदा –

उत्तम जल निकास वाली बलुई मिट्टी इसके लिये सर्वाधिक उपयुक्त होती है। इसकी खेती के लिए मृदा की पी0एच0 6 से 8 के बीच होनी चाहिए।

भूमि की तैयारी –

यह वर्षा ऋतु की फसल है। खेत को गर्मियों (अप्रैल–मई) में गहरी जुताई करके तैयार करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक –

खेत की आखिरी जुताई के पहले 10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर खाद मिला देना चाहिए। बोनी व रोपण से पूर्व खेत में 30 कि0ग्रा0 फास्फोरस तथा 30 कि0ग्रा0 पोटाश प्रति हेक्टेयर डालकर जुताई करनी चाहिए। कालमेघ की खेती सीधे बीज की बुआई कर या रोपणी में पौध तैयार कर की जा सकती है।

रोपणी की तैयारी –

इसके लिए 15 मई से 20 मई के मध्य छायादार स्थान पर रोपणी तैयार करने के लिए उठी हुई क्यारियॉ (1 x 20 मी0) तैयार कर लेनी चाहिए । इसमें प्रति क्यारी 50 कि0ग्रा0 गोबर खाद मिलाना चाहिए। एक क्यारी में लगभग 100 ग्राम बीज छिड़ककर बोना चाहिए। बीजों को बोने से पूर्व 0.2 प्रतिशत बावस्टीन नामक फफूँदनाशक से उपचारित करना चाहिए।

रोपण –

लगभग एक माह पश्चात् जब पौधे 10 से 15 से0मी0 के हो जायें, इन्हें खेत में रोपित कर देना चाहिए। पौध से पौध की दूरी तथा कतार से कतार की दूरी 30 से0मी0 रखनी चाहिए। पौधों का रोपण कार्य जून–जुलाई माह में करना ठीक रहता है ।

बीजों द्वारा –

बीजों को जून के अंतिम या जुलाई के प्रथम सप्ताह में छिड़काव विधि द्वारा या लाईन में बोया जा सकता है। लाईन से लाईन की दूरी 30 से0मी0 होना चाहिए। बीज छोटे होते हैं, बुआई के समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि बीज गहराई में न जाएं। बोते समय बीजों में रेत या मिट्टी लगभग 5 से 8 गुणा मिलाकर बोना चाहिए।

सिंचाई व निदाई–गुड़ाई –

रोपण के 30 से 40 दिनों पश्चात् कालमेघ की एक बार निदाई–गुड़ाई अवश्य करना चाहिए। सिंचाई आवश्यकतानुसार करना चाहिए।